हिन्दी साप्ताहिक

न्यूज आइकॉन

T.C. NO. MAHHIN10172

संपादक - मुर्तुजा मामाजीवाला | ईमेल: newsicon2021@gmail.com | मूल्यः रु. - 2/-

वर्षः 2 | अंकः 16 | पृष्ठः 8 | शुक्रवार,30 सितंबर से 06 अक्टूबर 2022

PFI पर 5 साल का बैन

सरकार बोली- इनकी गतिविधियों से सुरक्षा को खतरा

दिल्ली : केंद्र सरकार ने बुधवार सुबह पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया, यानी PFI को 5 साल के लिए बैन कर दिया। के अलावा 8 और संगठनों पर कार्रवाई की गई है। गृह मंत्रालय ने इन संगठनों को बैन करने का नोटिफिकेशन जारी किया है। इन सभी के खिलाफ टेरर लिंक के सबूत मिले हैं। केंद्र सरकार ने यह एक्शन (अनलॉफुल एक्टिविटी प्रिवेंशन एक्ट) के तहत लिया है। सरकार ने कहा, और उससे जुड़े संगठनों की गतिविधियां देश की सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा हैं। सरकार के कदम पर केंद्रीय

पंचायती राज मंत्री गिरिराज ने सिंह ने ट्वीट किया- बाय-बाय.. इसके बाद केरल के कांग्रेस

कांग्रेस सांसद बोले- RSS भी बैन हो

सांसद के सुरेश ने कहा कि फरर पर भी ढक्कक की तरह बैन लगना चाहिए, क्योंकि दोनों संगठनों का काम तो एक जैसा है। ढक्कक पर बैन के बाद फरर पर बैन की मांग उठ रही है..जुड़े इन संगठनों पर भी प्रतिबंध केंद्र सरकार के तहत और उससे जुड़े 8 संगठनों पर 5 साल का प्रतिबंध लगा रही है। ये कदम एजेंसियों की जांच के बाद उठाया जा रहा है। ढक्कक और इससे जुड़े संगठन देश में आतंकवाद का समर्थन कर रहे हैं।और इससे जुड़े संगठन गैरकानूनी गतिविधियों को अंजाम दे रहे थे। ये गतिविधियां देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए खतरा हैं। इनकी गतिविधियां भी देश की शांति और धार्मिक सद्भाव के लिए खतरा बन सकती हैं। ये संगठन चुपके-चुपके देश के एक तबके में यह भावना जगा रहा था कि देश में असुरक्षा है और इसके जरिए वो कट्टरपंथ को बढ़ावा दे रहा था।

किसकी होगी असली शिवसेना? शिंदे बनाम उद्धव की लड़ाई के बीच आया मुख्य चुनाव आयुक्त का रिएक्शन

मुंबई: किसकी होगी असली शिवसेना? यह तय करने का फैसला सुप्रीम कोर्ट ने भारत के निर्वाचन आयोग पर छोड़ा है। सुप्रीम कोर्ट ने असली शिवसेना के रूप में मान्यता देने और पार्टी का चुनाव चिह्न ह्यतीर-कमानह्ण आवंटित करने संबंधी महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की याचिका की सुनवाई पर आगे बढ़ने के लिए मंगलवार को निर्वाचन आयोग को अनुमति दे दी। अब इस बेहद चर्चित मामले पर भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त का भी रिएक्शन आ गया है। मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) राजीव कुमार इस समय गुजरात के दो दिवसीय दौरे पर हैं। प्रेस से बात करते हुए उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग (ईसी) इस मामले में पूरी तरह से पारदर्शी होगा और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की याचिका पर 'बहुमत का नियम' लागू करेगा। बता दें कि न्यायमूर्ति डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ ने उद्धव ठाकरे नीत खेमे की याचिका खारिज कर दी, जिन्होंने ह्यमूलह्ण शिवसेना होने के शिंदे खेमे के दावे पर फैसला करने से निर्वाचन आयोग को रोकने का अनुरोध किया था। पीठ में न्यायमूर्ति एम आर शाह, न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी, न्यायमूर्ति हिमा कोहली और न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा भी शामिल थे। संविधान पीठ ने कहा, ह्यह्यहम निर्देश देते हैं कि निर्वाचन आयोग के समक्ष कार्यवाही पर कोई रोक नहीं होगी। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद, मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि चुनाव निकाय के पास 'बहुमत के नियम' की एक पारदर्शी प्रक्रिया है और मामले को देखते हुए इसे लागू किया जाएगा। उन्होंने कहा, ह्यपहले से ही एक निर्धारित प्रक्रिया है। वह प्रक्रिया हमें अधिकार देती है और हम बहुमत का नियम लागू करके इसे बेहद पारदर्शी प्रक्रिया के तौर पर परिभाषित करते हैं। जब भी हम इस मामले पर गौर करेंगे तो ह्यबहुमत का नियमह्ण लागू करेंगे। उच्चतम न्यायालय का फैसला पढ़ने के बाद यह किया जाएगा। वह आगामी गुजरात विधानसभा चुनावों के संबंध में चुनावी तैयारियों का जायजा लेने के लिए गांधीनगर में थे। इससे पहले उद्धव ठाकरे खेमे की ओर से सुप्रीम कोर्ट न्यायालय में पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने दलील दी कि चुनाव चिह्न आदेश तभी लागू किया जा सकता है, जब दावा करने वाला उसी राजनीतिक दल से हो, लेकिन दावा एक विरोधी खेमा का हो। उन्होंने कहा, मेरा कहना है कि शिंदे पार्टी में अब नहीं हैं और सदस्यता त्याग दी गई है। ऐसे में, निर्वाचन आयोग उनकी सुनवाई कैसे करेगा? सिब्बल ने इस साल जून में महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के खिलाफ बगावत करने वाले शिंदे और शिवसेना के कुछ अन्य विधायकों के खिलाफ आयोग्यता नोटिस जारी किये जाने का हवाला देते हुए यह कहा। निर्वाचन आयोग की ओर से न्यायालय में पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अरविंद दतार ने कहा कि आयोग यह फैसला करने के लिए स्वतंत्र है कि किस खेमे में अधिक विधायक हैं।

फडणवीस सरकार के दौरान कांग्रेस से गठबंधन का प्रस्ताव लेकर आए थे - एकनाथ शिंदे

मुंबईः महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक चव्हाण ने बुधवार को एक चौंकाने वाला दावा किया। उन्होंने कहा कि फडणवीस सरकार के कार्यकाल के दौरान शिवसेना कांग्रेस के साथ गठबंधन करना चाहती थी। अशोक चव्हाण ने कहा कि 2014 और 2019 के बीच जब भाजपा-शिवसेना सरकार सत्ता में थी तब शिवसेना का एक प्रतिनिधिमंडल कांग्रेस के साथ गठबंधन का प्रस्ताव लेकर उनके पास मुंबई ऑफिस आया था। उन्होंने कहा कि उस प्रतिनिधिमंडल में वर्तमान मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी शामिल थे। शिंदे तब भाजपा के देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली सरकार में मंत्री थे और चव्हाण महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष थे। द इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, अपने गृहनगर नांदेड़ में स्थानीय पत्रकारों से बात करते हुए चव्हाण ने कहा, ह्यशिंदे शिवसेना के प्रतिनिधिमंडल के साथ भाजपा से नाता तोड़ने के प्रस्ताव के साथ मुझसे मिलने आए थे। मैंने कहा था कि शिवसेना को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के अध्यक्ष शरद पवार से भी सलाह लेनी चाहिए और अगर वह मान जाते हैं तो मैं कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व से बात करूंगा। लेकिन उसके बाद कुछ नहीं हुआ। चव्हाण के अनुसार, कथित बैठक राज्य में 2017 के स्थानीय निकाय चुनावों के दौरान हुई थी। उस समय भाजपा और शिवसेना के बीच संबंध बेहद तनावपूर्ण थे और दोनों दलों ने अलग-अलग चुनाव लड़ा था। कांग्रेस नेता शिंदे के उन दावों पर टिप्पणी कर रहे थे जिसमें उन्होंने कहा था कि उन्होंने उद्धव ठाकरे के खिलाफ विद्रोह इसलिए किया क्योंकि शिवसेना प्रमुख ने कांग्रेस और राकांपा के साथ हाथ मिलाकर हिंदुत्व को छोड़ दिया है। शिंदे के विद्रोह के कारण उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली महा विकास अघाड़ी (एमवीए) गठबंधन सरकार गिर गई थी। महा विकास अघाड़ी गठबंधन में शिवसेना के अलावा कांग्रेस और रकांपा शामिल थी।

इस बीच, शिंदे खेमे के मंत्री गुलाबराव पाटिल ने चव्हाण की टिप्पणी को बेतुका करार दिया और कहा कि अगर शिंदे की मौजूदगी में भी ऐसी बैठक हुई थी, तो उन्हें वहां जाने के लिए मजबूर किया गया होगा। उन्होंने कहा, ह्यदि आपका नेता आपको कहीं जाने और कुछ करने के लिए कहता है, तो आपको वह करना होगा। इसमें क्या बड़ी बात है?

उद्धव ठाकरे के बाद अब महाराष्ट्र में कांग्रेस को लगेगा तगड़ा झटका! विधायक जॉइन कर सकते हैं भाजपा

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति में घमासान अभी भी जारी है। पहले एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे को चौंकाते हुए उनसे मुख्यमंत्री की कुर्सी छीन ली। इसके बाद संगठन स्तर पर भी लगातार चोट पहुंचा रहे हैं। वहीं, अब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) महाराष्ट्र में कांग्रेस को कमजोर करने के लिए बिसात बिछा रही है। इतना ही नहीं, चर्चा तो यह भी है कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के दिग्गज नेता एकनाथ खडसे भी बीजेपी का दामन थाम सकते हैं। इसके अलावा महाराष्ट्र की राजनीति में इन दिनों एक नई चर्चा हो रही है। कहा जा रहा है कि जलगांव जिले में कांग्रेस विधायक शिरीष चौधरी कभी भी भाजपा में शामिल हो सकते हैं। महाराष्ट्र में बीजेपी नेताओं के भाषणों के जरिए इस बात के संकेत मिल रहे हैं कि और भी कई कांग्रेसी नेता बीजेपी के संपर्क में हैं। हालांकि, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले का दावा इसके ठीक विपरीत है। उनका कहना है कि बीजेपी के कुछ नेता कांग्रेस के संपर्क में हैं। इन दावों के बीच महाराष्ट्र की सियासत गरमा गई है।कहा जा रहा है कि बीजेपी ने कांग्रेस को झटका देने की तैयारी कर ली है। जलगांव जिले में भी रावेर से कांग्रेस विधायक शिरीष चौधरी के भाजपा में शामिल होने के साथ इसकी शुरूआत होगी।विधायक शिरीष चौधरी ने भी बीजेपी में शामिल होने की बात पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा, पिछले कुछ दिनों से मुझे भाजपा के कई कार्यकताओं और पदाधिकारियों के फोन आ रहे हैं। लेकिन अभी ऐसी कोई स्थिति नहीं है।

महाराष्ट्र बोर्ड एसएससी और एचएससी परीक्षा -2023 की तारीख घोषित

मुंबईः महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एंड हायर सेकेंडरी एजुकेशन, टइरलरए ने एसएससी दसवीं क्लास और एचएससी 12वीं क्लास 2023 की तारीख की घोषणा कर दी है। अभी टेंटेटिव डेट शीट जारी की गई है। डेट शीट बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट पर जारी की गई है।

डेटशीट का विस्तृत ब्यौरा बाद में जारी किया जाएगा। डेटशीट के अनुसार 10वीं और 12वीं की परीक्षाएं फरवरी में शुरू हो जाएंगी और 20 मार्च को 12वीं और 25 मार्च को दसवीं की परीक्षाएं समाप्त हो जाएंगी। टेंटेटिव डेटशीट के अनुसार 12वीं की परीक्षाएं 21 फरवरी से 20 मार्च 2023 तक चलेंगी, जबकि एसएससी की परीक्षाएं 2 मार्च से 25 मार्च तक चलेंगी।

मनी लॉन्ड्रिंग मामलाः अनिल देशमुख की जमानत अर्जी पर सुनवाई पूरी

हाई कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा

मुंबईः बॉम्बे हाई कोर्ट ने मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में प्रवर्तन निदेशालय (एऊ) की ओर से गिरफ्तार महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री अनिल देशमुख की जमानत अर्जी पर बुधवार को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। कोर्ट ने कहा कि वो जल्द से जल्द इस मसले पर अपना फैसले देने की कोशिश करेगा।

जस्टिस एन.जे.जामदार ने ईडी की ओर से पेश अतिरिक्त सालिसीटर जनरल (एएसजी) अनिल सिंह की जमानत अर्जी पर जिरह पूरी होने के बाद मामले में सुनवाई पूरी कर ली। सुप्रीम कोर्ट की ओर से करीब छह महीने से लंबित अर्जी पर तेजी से सुनवाई कर फैसला देने के निर्देश देने के बाद हाई कोर्ट ने मंगलवार को मामले में सुनवाई शुरू की। जमानत अर्जी पर सुनवाई में देरी होने पर देशमुख द्वारा सुप्रीम कोर्ट का रुख करने का संदर्भ देते हुए न्यायमूर्ति जामदार ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) नेता के वकील विक्रम चौधरी को कहा कि शीघ्र सुनवाई के लिए अर्जी का यहां उल्लेख किया जा सकता है। चौधरी ने इस पर कहा कि उनकी शिकायत हाई कोर्ट के प्रति नहीं बल्कि ईडी अधिकारियों के खिलाफ है जो लंबे वक्त के लिए स्थगन मांगते हैं। अर्जी का विरोध करते हुए एएसजी सिंह ने दावा किया कि देशमुख पर भ्रष्टाचार, पद के दुरुपयोग और मनी लॉन्ड्रिंग जैसे गंभीर आरोप हैं। उन्होंने कहा, ह्यआर्थिक अपराध गंभीर है और यह देश की वित्तीय मजबूती को प्रभावित करता है। अदालत को कहना होगा कि आरोपी बिल्कुल संलिप्त नहीं है।ह्न देशमुख के वकील ने कहा था कि उन्हें उनकी सेहत और उम्र के आधार पर जमानत पर रिहा किया जाना चाहिए। सिंह ने इसका विरोध करते हुए कहा कि देशमुख को ऐसी कोई बीमारी नहीं है जिसका इलाज जेल के अस्पताल में नहीं हो सकता है। चौधरी ने तर्क दिया कि ईडी की जांच कभी खत्म नहीं होने वाली है।

संपादकीय

संपादक - मुर्तुजा मामाजीवाला

उलझी दुनिया को सुलझाने लगा भारत

नई दिल्ली के लिए मौजूदा हालात खास हैं। रूस और यूक्रेन आपस में उलझे हुए हैं, लेकिन दोनों भारत के साथ दोस्ती के हिमायती हैं और नई दिल्ली को युद्ध के मामले में अपने पक्ष में करना चाहते हैं। यूरोप और अमेरिका इस जंग के प्रमुख खिलाड़ी हैं, जो कीव की मदद कर रहे हैं, लेकिन रूस के लिए मुश्किलें बढ़ाने वाली उनकी किसी कार्रवाई में भारत के भाग न लेने और उसकी उदासीनता के बावजूद वे नई दिल्ली के रुख से संतुष्ट हैं। एशिया, अफ्रीका व लातीन अमेरिका के छोटे-छोटे देश युद्ध के खिलाफ हैं और वे इस बात से दुखी हैं कि बिना किसी गलती के उनको इसका खमियाजा भुगतना पड़ रहा है। मगर दुनिया भारत की तरफ उम्मीद भरी नजरों से देखती है, क्योंकि वह युद्ध के परिणामों के बारे में उन वैश्विक मंचों पर अपनी बात साफगोई से कह सकता है, जहां उस दुनिया की पहुंच बहुत कम है। संयुक्त राष्ट्र का शीर्ष नेतृत्व तो भारत को घटनाक्रम से अवगत करा रहा है और इस तनातनी को खत्म करने के महत्वपूर्ण साझेदार के रूप में उस पर भरोसा करता है।

जाहिर है, युद्ध से जुडे.और इससे परे अहम रणनीतिक व विकास संबंधी मुद्दों पर दुनिया भारत का साथ चाहती है। कोई इसे विदेश मंत्रालय का वक्तव्य समझने की भूल न करे, बल्कि निजी अनुभव है। हिन्दुस्तान टाइम्स ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के अलावा सात देशों के विदेश मंत्रियों से अलग से बात की, संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों से चर्चा की और दो सप्ताह पहले लॉस एंजिल्स में ह्यइंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क मीटह्ल के इतर कई दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के राजनयिकों का मत जाना। ये तमाम लोग भारत का अधिकाधिक साथ चाहते हैं।

जहां ऑस्ट्रिया, एस्टोनिया और फिनलैंड ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के युद्ध संबंधी बयान पर प्रधानमंत्री मोदी की टिप्पणी की तारीफ की और नई दिल्ली के साथ द्विपक्षीय रिश्ते को मजबूत बनाने पर जोर दिया, वहीं मेडागास्कर ने यह बात दोहराई कि वह किस तरह से ह्यभारत, भारतीयता और हिंद महासागर से जुड़ा रहा है। उसकी इच्छा है कि छोटे देशों पर युद्ध के असर को कम करने के लिए नई दिल्ली के साथ साझेदारी बढ़ाई जाए। इसी तरह, ऑस्ट्रेलिया ने क्वाड में भारत की भागीदारी की सराहना की, तो लीबिया चाहता था कि उसके संक्रमणकालीन दौर में नई दिल्ली अधिक भागीदारी करे और त्रिपोली में अपना दूतावास फिर खोले। बोलीविया जहां लिथियम के दोहन संबंधी परियोजनाओं में हिस्सेदारी के लिए भारत को बुलाना चाहता है, तो दक्षिण एशियाई राष्ट्र चाहते हैं कि भारत इस क्षेत्र में संतुलन लाने के लिए और अधिक सक्रियता दिखाए, जबकि वे आर्थिक रूप से चीन के साथ कहीं अधिक मजबूती से जुड़े हुए हैं। एक सार्वजनिक कार्यक्रम में यदि गुयाना के विदेश मंत्री ने रुंधे गले से महामारी के दौरान भारत की तरफ से मिली मदद के लिए शुक्रिया कहा, तो यमन ने भारत की खाद्य सहायता की तारीफ की। अगर तंजानिया मौजूदा दौर के तमाम बड़े मुद्दों पर भारत से सहमत है, तो संयुक्त राष्ट्र भारत के डिजिटल-संचालित वित्तीय समावेशन, कल्याण और नकद हस्तांतरण मॉडल को समझने व दोहराने का पक्षधर है। अमेरिका के ही कई हलकों को लें

कट्टरता की तह तक जल्दी पहुंचे जांच

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए), प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और राज्य पुलिस बलों द्वारा पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के खिलाफ की जा रही राष्ट्रव्यापी कार्रवाई ने जोरदार, लेकिन आरोप-प्रत्यारोपों वाली बहस शुरू कर दी है। एक मुखर खेमा मानता कि मुस्लिम-विरोधी खास एजेंडे को आगे बढ़ाने के कारण पीएफआई को निशाना बनाया जा रहा है, जबकि दूसरा वर्ग इस बात के लिए सत्ता-प्रतिष्ठान की तारीफ कर रहा है कि उसने एक ऐसे संगठन के खिलाफ कार्रवाई की है, जो व्यवस्था को अस्थिर करने पर आमादा है। हालांकि, निष्पक्ष विचारक इन दोनों मतों के बीच कहीं सच के छिपे होने की बात कह सकते हैं।

पीएफआई तीन इस्लामिक गुटों के विलय के साथ साल 2006 में अस्तित्व में आया। अपनी उग्र भाषा और मुस्लिम समुदाय को हिंदू पूर्वाग्रह के शिकार के रूप में चित्रित करने के कारण इसने अधिकारियों का ध्यान अपनी ओर खींचा। इसी पृष्ठभूमि के कारण वह स्पष्ट करता है कि दक्षिणपंथी हिंदूवादी तत्वों के खिलाफ लड़ने के लिए वह संकल्पित है, चाहे इसके लिए उसे जिस किसी साधन का इस्तेमाल करना पडे.। नतीजतन, पिछले एक दशक में हिंसा खूब बढ़ी है, खासकर दक्षिण भारत में। केरल, जहां एक बड़ी और दबदबा रखने वाली मुस्लिम आबादी है, पीएफआई का गढ़ है और इस समुदाय के खिलाफ कथित अन्याय को लेकर यहां अक्सर संघर्ष होते रहे हैं।

शुरूआती दिनों में पुलिस की प्रतिक्रिया सुस्त और बिखरी हुई थी। यह जाहिर तौर पर सत्ता की तरफ से स्पष्ट दिशा-निर्देश के अभाव के कारण था। तब भ्रमित पुलिस पदानुक्रम के कारण भी पीएफआई के खतरों से निपटने के लिए जरूरी कार्रवाई को लेकर आम सहमति नहीं बन पाई। पुलिस नेतृत्व इस बात को लेकर सावधान रहता था कि ऐसी किसी कार्रवाई से उस पर धार्मिक पूर्वाग्रह के लांछन न लग जाएं। साल 2014 में नरेंद्र मोदी सरकार की ताजपोशी और कुछ राज्यों में बदलाव से कानून लागू करने संबंधी नजरिये में स्पष्टता आई है। राजनीतिक दिशा अब कहीं अधिक स्पष्ट और सख्त कार्रवाई की पक्षधर है। हाल के छापों और महत्वपूर्ण दस्तावेजों की जब्ती से हम इसे आसानी से समझ सकते हैं। यहां तक कि मीडिया से बातचीत के दौरान भी एजेंसियों ने मामले की गंभीरता कम नहीं आंकी। उनकी यह साफगोई भविष्य के लिए उम्मीद जगाती है।

एजेंसियों ने साफ कहा है कि पर्याप्त सुबूतों व राह भटके पीएफआई कार्डर व संगठन से सहानुभूति रखने वालों की पहचान करने के बाद ही छापेमारी की कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया। यह बताता है कि उन्होंने गैर-कानूनी कृत्यों को बेपरदा करने के लिए किस कदर की मेहनत की होगी। छापेमारी व गिरफ्तारियों के बाद हिंसा की छिटपुट घटनाओं से पता चलता है कि पीएफआई नेतृत्व इन कार्रवाइयों को लेकर बेखबर था। अपनी योजना को इस कदर गोपनीय बनाए रखने के लिए एनआईए व ईडी, दोनों को बधाई देनी चाहिए, क्योंकि कई मामलों में हमने देखा है कि विश्वासघातियों ने अपराधियों या संदिग्धों को पहले ही संवेदनशील जानकारियां लीक कर दीं। यह मानने की भी ठोस वजह है कि कुछ पीएफआई सदस्य सीमा-पार के आतंकी गुटों के साथ मिल गए थे। हालांकि, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में यह दुरभिसंधि दिखी है और इसे तोड़ा जाना आवश्यक है।

यह विश्वास करना कठिन है कि पीएफआई गोपनीय तरीके से जो कर रहा था, उससे राष्ट्रीय सुरक्षा को कोई खतरा नहीं था। अगर सरकार को दोष देना है, तो इस तरह की कार्रवाई पहले न किए जाने के लिए उसको दोषी मानना चाहिए। हालांकि, मेरा यही मानना है कि अधूरी तैयारी या पर्याप्त सुबूतों के अभाव में की गई कार्रवाई से बेहतर है, कुछ समय के लिए इंतजार करना। लिहाजा सवाल यह है कि अब आगे किस तरह की चुनौतियां आने वाली हैं? निश्चय ही, कई जटिल मुद्दे हमारा इंतजार कर रहे हैं, क्योंकि काम का एक छोटा हिस्सा अभी पूरा हुआ है।

इन कार्रवाइयों के दो पहलू हैं, जिन पर संजीदगी से ध्यान देना होगा। पहला, एनआईए और ईडी, दोनों ने काफी मुश्किल काम को अंजाम दिया है। इससे पहले कि पीएफआई खुद को फिर से संगठित करे, हमें उसके अन्य अज्ञात स्रोतों और तत्वों की पहचान करनी होगी। उसके अंतरराष्ट्रीय रिश्ते को उजागर करना सबसे जरूरी है और मुझे विश्वास है कि इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) व रिसर्च ऐंड एनालिसिस विंग (रॉ) इसके लिए आगे आएंगे। अच्छी बात है कि हमने अभी तक सरकारी एजेंसियों के बीच किसी तरह के तनाव की बात नहीं सुनी है। यह भविष्य की कार्रवाइयों के लिहाज से एक शुभ संकेत है। चूंकि हमारे कई पश्चिमी देशों के साथ बहुत अच्छे संबंध हैं, तो हम उनके खुफिया संगठनों की इस मामले में हरसंभव मदद ले सकते हैं। पीएफआई का एजेंडा निश्चय ही भारत और उसके पड़ोस में अंतर-धार्मिक संघर्ष पैदा करना है। हमें इसकी जड़ें खोदने की जरूरत है।

दूसरा कठिन काम, गिरफ्तार पीएफआई सदस्यों और उसके समर्थकों का सफल अभियोजन कराना है। एजेंसियों द्वारा एकत्र किए गए सुबूतों की पूरी सावधानी के साथ छानबीन की जानी चाहिए और उनको सक्षम अभियोजकों (अदालत में जिरह करने वाला वादी) को सुपुर्द करना चाहिए। इसमें कोई जी-हुजूरी करने वाला कानूनी अधिकारी नहीं चाहिए। इस मामले को ऐसे सक्षम और ईमानदार अधिकारी की जरूरत है,

जो जांच अधिकारियों द्वारा पेश हर सुबूत को मंजूरी देने से पहले पूरी तरह से जांचे-परखे। यह कतई नहीं भूलना चाहिए कि इतिहास में कई ऐसे उदाहरण मौजूद हैं, जब नाकारा जांच-पड़ताल ने कई महत्वपूर्ण मामलों को बेपटरी कर दिया। अगर एनआईए व ईडी को और अधिक विश्वसनीयता अर्जित करनी है, तो उनकी जांच सच की तह तक जानी चाहिए। सुनियोजित आतंकी मामलों में यह निश्चय ही एक बेहद कठिन चुनौती है। एक बात और। हमें यह मानना चाहिए कि कोई भी जांच एजेंसी सर्वज्ञ नहीं होती या वह चूक नहीं कर सकती। हाल की कुछ गिरफ्तारियों में भी ऐसा कहा जा सकता है।

अंकिता भंडारी मर्डर केस में वकीलों की 'ना', हत्यारोपियों की कोर्ट में सुनवाई टली

देहरादूनः अंकिता भंडारी मर्डर केस में वकीलों के भारी विरोध के बीच आज बुधवार को हत्यारोपियों की कोर्ट में सुनवाई नहीं हो पाई। वकीलों ने अंकिता के हत्यारोपियों का केस लड़ने से मना कर दिया। वनंतरा रिजॉर्टक के मालिक और भाजपा नेता के बेटे पुलकित आर्य सहित दो हत्यारोपियों को पुलिस ने 23 सितंबर को गिरफ्तार किया था। हत्यारोपियों को गिरफ्तारी के बाद न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया था, जिसके बाद प्रदेशभर में प्रदर्शन कर रहे रहे लोगों ने पुलिस रिमांड नहीं मिलने पर कई सवाल उठाए थे। हत्यारोपियों की न्यायिक हिरासत 06 अक्तूबर को खत्म हो रही है। मालूम हो कि कोटद्वार बार एसोसिएशन ने प्रदेश की बेटी अंकिता भंडारी के हत्यारों की पैरवी नहीं करने का निर्णय लिया

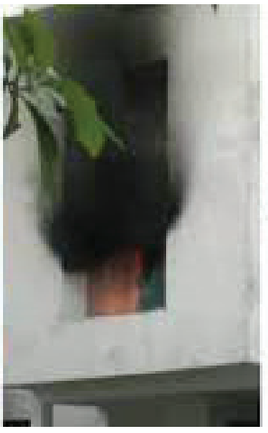

है।

एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय पंत ने कहा कि अंकिता हत्याकांड ने पूरे प्रदेश को झकझोर कर रख दिया है और यह दिल दहलाने वाला हादसा है। उन्होंने कहा कि सभी अधिवक्ता अंकिता के परिवार के साथ हैं और सभी मिलकर यह प्रयास करेंगे कि अंकिता के परिवार को शीघ्र इंसाफ मिले।

वकीलों का कहना था कि कि देवभूमि में ऐसे हादसे होना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है और दोषियों को ऐसा दंड मिलना चाहिए जो पूरे देश में एक नजीर बन सके। कहा कि राज्य सरकार को अंकिता के परिवार की हरसंभव सहायता के लिए आगे आना चाहिए। मौके पर इस मामले की फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुनवाई करने की मांग भी की गई थी।अंकिता हत्याकांड में एसआईटी की टीम ने अंकिता हत्याकांड की जांच के लिए लक्ष्मणझूला में डेरा डाल दिया है। डीआईजी पी. रेणुका लक्ष्मणझूला थाने पहुंचीं थीं, और टीम के साथ बंद कमरे में केस से संबंधित जानकारी जुटाई। पौड़ी जिले की बेटी रिसेप्शनिस्ट अंकिता भंडारी की हत्या से उत्तराखंड ही नहीं पूरे देश में आक्रोश है। देश की जनता अंकिता के हत्यारों को फांसी की सजा दिलाने के लिए सड़कों पर उतरकर धरना-प्रदर्शन कर रही है। प्रदेश सरकार ने जनता के आक्रोश को देखते हुए मामले की जांच एसआईटी को सौंपी है। एसआईटी की टीम ने डीआईजी पी. रेणुका देवी के नेतृत्व में बीते रविवार देर शाम को रिजॉर्ट और घटनास्थल के आसपास जांच पड़ताल भी की। इसके बाद सोमवार को डीआईजी लक्ष्मणझूला थाने पहुंचीं।जहां उन्होंने पुलिस टीम से केस से संबंधित जानकारी जुटाई। साथ ही कुछ लोगों से भी पूछताछ की। बंद कमरे में एक घंटे से अधिक समय तक टीम के साथ जानकारी चर्चा की। वहीं, पुलिस सूत्रों के अनुसार एसआईटी ने केस से संबंधित साक्ष्य और अहम जानकारियां जुटानी शुरू कर दी हैं। इस दौरान अंकिता मर्डर केस के विवेचक इंस्पेक्टर राजेंद्र खोलिया भी मौजूद रहे। अंकिता भंडारी की पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद कभी भी पुलिस आरोपियों को रिमांड पर ले सकती है। रिमांड के लिए पुलिस ने सभी तैयारी कर ली हैं।

राजीव गांधी ग्रामीण ओलंपिक खेल की जिला स्तरीय

प्रतियोगिताएं प्रारंभ : मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की दूरगामी सोच की बदौलत आयोजित हुई विश्व की सबसे बड़ी खेल स्पर्धा : मेघवाल

नई दिल्ली : इस दौरान डॉ. भीमराव अंबेडकर पीठ के महानिदेशक डॉ. मदन गोपाल मेघवाल, जिला प्रमुख मोडाराम मेघवाल, संभागीय आयुक्त डॉ. नीरज के पवन, जिला कलक्टर भगवती प्रसाद कलाल, जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी नित्या के., अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) ओमप्रकाश, उप जिला प्रमुख लक्ष्मी बिश्नोई और गजेंद्र सिंह सांखला बतौर अतिथि मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना के साथ हुआ। लोक कलाकारों द्वारा केसरिया बालम पधारो मारे देश की प्रस्तुति दी गई। जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी नित्या के. ने स्वागत उद्बोधन दिया। उन्होंने बताया कि जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में 980 खिलाड़ी भागीदारी निभा रहे हैं। इनमें 494 महिला तथा 486 पुरुष खिलाड़ी शामिल हैं। इन मुकाबलों के लिए कुल 88 टीमों का गठन किया गया है। इनमें महिला वर्ग की 43 और पुरुष वर्ग की 45 टीमें शामिल हैं।

इस अवसर पर मार्च पास्ट निकाली गई, जिसका नेतृत्व बज्जू खालसा की टीम ने किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. भीमराव अंबेडकर पीठ के महानिदेशक डॉ मदन मेघवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की दूरगामी सोच की बदौलत दुनिया की सबसे बड़ी खेल स्पर्धा राजीव गांधी ग्रामीण ओलंपिक खेलों के रूप में आयोजित हो रही है। इसके ग्राम पंचायत स्तरीय मुकाबलों में लगभग 30 लाख खिलाड़ियों ने भागीदारी निभाई। यह अपने आप में कीर्तिमान है। उन्होंने कहा कि इन खेलों के माध्यम से युवाओं की ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग हो रहा है। खेलों के माध्यम से आपसी सौहार्द एवं भाईचारा बढ़ा है तथा लोगों में सहयोग की भावना पैदा हुई है।

PFI के समर्थन में उतरे असदुद्दीन ओवैसी, बोले- ऐसा प्रतिबंध खतरनाक है

नई दिल्ली AIMIM चीफ असदुद्दीन ने पीएफआई का समर्थन करते हुए कहा है कि अगर कुछ लोगों की गलत गतिविधि की वजह से संगठन को बैन किया जाता है तो यह खतरनाक है। उन्होंने इस फैसले को तानाशाही करार दिया है। उन्होंने कहा, कट्टरपंथी सोच का हम हमेशा से विरोध करते आए हैं लेकिन इस तरह का प्रतिबंध बिल्कुल गलत है। इसका समर्थन नहीं किया जा सकता। ओवैसी ने कहा कि दक्षिणपंथी संगठनों पर बैन कब लगेगा। ऐसे संगठनों को क्यों संरक्षण दिया जा रहा है ?पीएफआई का समर्थन करने वाले ओवैसी अकेले ही नहीं हैं। AIUDF विधायक रफीकुल इस्लाम ने भी प्रतिबंध का विरोध किया और कहा कि सरकार को यह कार्रवाई करने से पहले जांच करानी चाहिए थी। इसके अलावा सरकार को आरएसएस, बजरंग दल और वीएचपी की भी जांच करने का आदेश देना चाहिए। आरएसएस के खिलाफ कार्रवाई की बात कांग्रेस नेता के सुरेश ने भी कही है। इसके असावा आरजेडी चीफ और बिहार के पूर्व सीएम लालू प्रसाद यादव ने भी कहा कि आरएसएस पर प्रतिबंध लगना चाहिए।

कविता

कहै कबीर दीवाना-ओशो

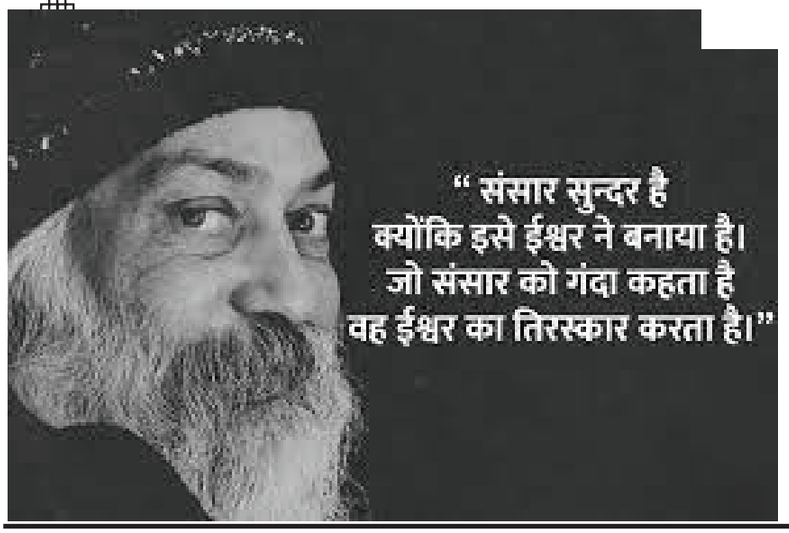

पल पलक न लागे इस डर से पलक नहीं झपकता कि पता नहीं, इधर पलक झपके, उधार तुम आओ। अवसर चूक जाए। पलक झपकाने से ही डर लगता है। एक क्षण...कौन जाने वही क्षण मिलने का क्षण हो।

दर्द बंद दीदार का... वह जो देखने के लिए दीवाना है, वह जो देखने के लिए पीड़ा से भरा है, निसि बास जागे। वह सोता ही नहीं। सोने की सुविधा उसे नहीं। वह जागता है--दिन भी और रात भी। कौन जाने कब उसका आगमन हो! कब उसका रथ रुक जाए आकर द्वार पर! कहीं ऐसा न हो, कि वह मुझे सोया हुआ पाए। ध्यान की अवस्था सतत जागरण की अवस्था है। सतत चेष्टा है, कि जागा रहूं। जो अब कै प्रीतम मिलें, कूः निमिख न न्यारा। अब कबीर गुरु पाइया, मिला प्राण पियारा। जो अब कै प्रीतम मिलें... ये शब्द बड़े अनूठे हैं। इनका अर्थ... कबीर कहते हैं, जो अब कै प्रीतम मिलै। वे कहते हैं कि मिले तो **जारी...**

सरसों के तेल में मिलाकर लगाएं ये 5 चीजें, दूर होंगी बालों की कई समस्याएं

तेल लगाना बहुत जरूरी होता है। बालों को स्वस्थ रखने के लिए शरीर को भीतर से पोषण प्रदान करना जरूरी है, उतना ही बाहरी रूप पोषण प्रदान करना भी है। आप संतुलित और पोषक तत्वों से आहार को फॉलो करके आप आसानी से बालों के लिए जरूरी पोषण प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन जब बालों बाहरी रूप से पोषण प्रदान करने की बात आती है तो बालों में तेल लगाने से बेहतर कुछ भी नहीं हो सकता है। बालों के लिए सरसों और नारियल तेल का प्रयोग बहुत आम है। लेकिन लोग भारतीय घरों में सरसों के तेल का प्रयोग अधिक किया जाता है। बालों की लगभग सभी समस्याओं को दूर करने के लिए सरसों का तेल एक रामबाण उपाय है। साथ ही इसका प्रयोग भी बालों पर कई तरह से किया जा सकता है। यहां तक कि बालों की कई समस्याओं को दूर करने के लिए आप बालों में कई चीजें मिलाकर भी बालों में अप्लाई कर सकते हैं। या क्या मिलाकर लगाने से ज्यादा फायदे मिलते हैं? इस लेख में हम आपको ऐसे 5 चीजों के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें मिलाकर सरसों के तेल में बालों में मिलाकर लगाने से आप बालों सेहदमंद रख सकते हैं। यह मिश्रण डैंड्रफ, स्कैल्प की खुजली, एलर्जी, सोरायसिस आदि को दूर करने में बहुत लाभकारी है। 2. सरसों के तेल में एलोवेरा जेल मिलाएंः एलोवेरा बालों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। यह मिश्रण आपके बालो को मजबूत बनाने के साथ ही घना और शाइनी भी बनाता है।3. सरसों के तेल में दही मिलाकर लगाएंः दही के साथ सरसों के तेल का मिश्रण डैंड्रफ का रामबाण उपाय है। यह एलर्जी और पपड़ीदार स्कैल्प की समस्या भी दूर करता है। साथ ही आपको बालों में शाइन लाता है।

4. सरसों के तेल में आंवला या नींबू का रसः दोनों ही विटामिन सी का बेहतरीन स्रोत हैं। यह मिश्रण सफेद बालों को काला बनाने में बहुत लाभकारी है। साथ ही डैंड्रफ आदि का भी प्रभावी उपचार है। यह बालों का झड़ना भी रोकता है।

5. सरसों के तेल में मेहंदी मिलाकर लगाएंः सरसों का तेल और मेहंदी का मिश्रण आपको घने, शाइनी और औक नेचुरली काले बाल पाने में मदद करता है। साथ ही बालों का झड़ना रोके और मजबूत बनाने में बहुत लाभकारी है।

श्रीराम राघवन के नाम पर अभिनेत्रियों को बना रहा था बेवकूफ,

इंजीनियर को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली। फिल्म इंडस्ट्री से एक बार फिर से धोखाधड़ी की खबर सामने आ रही है। वसोर्वा पुलिस ने तमिलनाडु के एक 31 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर को धोखाधड़ी के मामले में गिरफ्तार किया है। इस युवक ने कथित तौर पर फेमस फिल्म निमार्ता, निर्देशक और पटकथा लेखक श्रीराम राघवन के नाम पर इंस्टाग्राम और फेसबुक पर फर्जी अकाउंट बनाए और कई अभिनेत्रियों और मॉडलों के साथ-साथ फोटोग्राफरों को भी कई महीनों तक राघवन के नाम पर बेवकूफ बनाया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, कई स्ट्रगलर मॉडल्स और एक्ट्रेसेस से काम पाने के लिए उस शख्स से संपर्क करने के लिए उसे मैसेज भेज रही थीं। वहीं आरोपित महिलाओं से सोशल मीडिया पर उनके साथ चैट करता था और उन्हें काम दिलाने के बहाने से उनसे ये कहकर फोटो मांगता था और इन लड़कियों को अलग-अलग फोटोग्राफरों के पास भेजता था। ये मामला तब सामने आया जब कुछ मॉडल और एक्ट्रेसेस ने राघवन के कुछ करीबियों से मिलकर उन्हें इस पूरे मामले की जानकारी दी। साथ ही सोशल मीडिया पर निर्देशकों के साथ बातचीत और उनसे किए गए वादों के बारे में बताया।

राघवन को जब उनके एक करीबी दोस्त ने इस पूरे मामले की जानकारी दी तब उन्होंने इसकी शिकायत पुलिस में की। उन्होंने पुलिस को बताया कि इस पूरे मामले से अंजान और हैरान हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि उसका इंस्टाग्राम पर कोई अकाउंट नहीं है और फेसबुक पर उसका अकाउंट है, लेकिन वो काफी वक्त से इसका बिल्कुल भी इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। उन्होंने ये भी बताया कि काफी वक्त पहले उनसे एक एक्ट्रेस ने फेसबुक पर संपर्क किया था, जिसे उन्होंने अपनी वेब सीरीज में काम भी दिया।

भारत के पूर्व क्रिकेटर ने बताई दिलचस्प बात, कहा- टीम इंडिया में नंबर 4 की जगह है फुल,

इस बल्लेबाज ने रख दिया है रूमाल

नई दिल्ली। इस समय टी20 फॉर्मेट में सूर्यकुमार यादव का बल्ला आग उगल रहा है। एशिया कप के बाद ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले गए टी20 सीरीज और मौजूदा साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेले जा रहे टी20 सीरीज में सूर्यकुमार यादव जबरदस्त फॉर्म में दिख रहे हैं। साउथ अफ्रीका के खिलाफ सूर्यकुमार यादव ने इस पारी में 33 गेंदों पर 3 छक्के व 5 चौकों की मदद से नाबाद 50 रन की पारी खेली और ये रन उन्होंने 151.52 की स्ट्राइक रेट से बनाए। इस समय सूर्यकुमार यादव किसी भी विपक्षी टीम के खिलाफ और हर खतरनाक बॉलिंग लाइन अप के खिलाफ विस्फोटक बल्लेबाजी कर रहे हैं।सूर्यकुमार यादव जिस आक्रमक अंदाज से बल्लेबाजी कर रहे हैं उसे देखने के बाद कई लोगों ने उनकी तारीफ की है। बता दें कि भारत के पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद कैफ (ट्वीट्टर हैंडल) ने भी सूर्यकुमार यादव की तारीफ की है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्विटर का सहारा लेते हुए कैफ ने लिखा, ह्यचाहे टॉप क्लास स्पिनर हो, पिच में गेंद टर्न कर रही हो, गेंद सिम कर रही हो, टीम मुश्किल परिस्थिति में हो, सूर्यकुमार यादव को किसी बात की चिंता नहीं होती है। भले ही सूर्यकुमार यादव ऑरेंज कैप न जीत पाए मगर वो आपको मैच जिताकर देंगे। कैफ ने आगे कहा,ह्लनंबर-4 पर रूमाल डाल दिया है सूर्या ने। अब वो लंबे समय तक उस स्थान से नहीं हटने वाले

बता दें कि साउथ अफ्रीका के खिलाफ सूर्यकुमार यादव ने केएल राहुल के साथ मिलकर 93 रन की शानदार साझेदारी निभाई। गौरतलब है कि साल 2022 सूर्यकुमार यादव के लिए किसी सपने से कम नहीं है। उन्होंने इस साल कई यादगार पारियां खेली है। इस साल उन्होंने टी20 फॉर्मेट में 700 रन बना चुके हैं। इस फॉर्मेट में उनका औसत लभगभ 40 का रहा और स्ट्राइक रेट लगभग 180 का रहा है। गौरतलब है कि साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेले गए पहले टी20 मुकाबले में सूर्यकुमार यादव ने एक नया वर्ल्ड रिकार्ड भी अपने नाम दर्ज कर लिया है।

इंडिया लीजेंड्स ने आस्ट्रेलिया को हराकर फाइनल में बनाई जगह, नमन ओझा और इरफान पठान ने खेली तूफानी पारी

नई दिल्ली: इंडिया लीजेंड्स ने सचिन तेंदुलकर की कप्तानी में शेन वाटसन की कप्तानी वाली आस्ट्रेलिया लीजेंड्स को 5 विकेट से हराकर रोड सेफ्टी वर्ल्ड सीरीज टी20 2022 टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बना ली।भारत और आस्ट्रेलिया के बीच इस टूर्नामेंट का पहला सेमीफाइनल मुकाबला रायपुर में खेला गया। इस मैच में भारत ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया था और आस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 20 ओवर में 5 विकेट पर 171 रन बनाए। भारत ने 19.2 ओवर में 5 विकेट पर 175 रन बनाते हुए 5 विकेट से मैच जीत लिया और फाइनल में पहुंच गया।इंडिया लीजेंड्स को जीत के लिए 172 रन का लक्ष्य मिला था और सचिन की टीम ने इसे हासिल कर लिया। टीम की इस जीत में प्रज्ञान ओझा और इरफान पठान की पारी का बड़ा योगदान रहा। टीम के दिग्गज बल्लेबाज जैसे कि सचिन तेंदुलकर, सुरेश रैना व युवराज सिंह ज्यादा रन बनाने में सफल नहीं हो पाए। नमन ओझा ने 62 गेंदों पर 5 छक्के व 7 चौकों की मदद से 90 रन की पारी खेली तो वहीं आखिरी में इरफान पठान ने 12 गेंदों पर 4 छक्के व 2 चौकों की मदद से 12 गेंदों पर नाबाद 37 रन बनाकर टीम को जीत दिला दी। इंडिया की तरफ से कप्तान सचिन तेंदुलकर ने 10 रन, सुरेश रैना ने 11 रन, युवराज सिंह ने 18 रन, स्टुअर्ट बिन्नी ने 2 रन जबकि यूसुफ पठान ने एक रन बनाए।

साउथ अफ्रीका के खिलाफ टी20 सीरीज में बुमराह की जगह शमी नहीं इस गेंदबाज को टीम में मिल सकता है मौका

नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप 2022 में आस्ट्रेलिया की धरती पर भारत की तरफ से टीम के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह का एक्शन देखने को नहीं मिलेगा। बैक स्ट्रेस फ्रैक्चर की वजह से वो इस अहम टूर्नामेंट से बाहर हो गए और अगले छह महीनों तक वो क्रिकेट के मैदान पर नजर नहीं आएंगे। अब बुमराह की जगह साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेले जा रहे तीन मैचों की टी20 सीरीज के लिए मो. सिराज को भारतीय टीम में शामिल किया जा सकता है। साउथ अफ्रीकी टीम अभी भारत के दौरे पर है और तीन मैचों की टी20 सीरीज खेल रही है। इस सीरीज का पहला मैच बुधवार को खेला गया था जिसमें बुमराह प्लेइंग इलेवन का हिस्सा अपनी इंजरी की वजह से नहीं थे। बुमराह की जगह इस मैच में दीपक चाहर को मौका दिया गया था जिन्होंने अच्छी गेंदबाजी की थी, लेकिन क्रिकबज से मुताबिक बुमराह अब इस टी20 सीरीज से बाहर हो गए हैं तो उनकी जगह मो. सिराज को टीम में शामिल किया जा सकता है।

जसप्रीत बुमराह के इंजर्ड होने की खबर बुधवार को साउथ अफ्रीका के खिलाफ पहले टी20 मैच से ठीक पहले ही आई थी और वो इस मैच का हिस्सा नहीं बन सके थे,

लेकिन गुरुवार को ये खबर सामने आ गई कि उनकी इंजरी गंभीर है और वो टी20 वर्ल्ड कप में नहीं खेलेंगे। बुमराह से पहले टीम के स्टार आलराउंडर रवींद्र जडेजा अपने घुटनों की सर्जरी की वजह से इस टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे और बुमराह का बाहर होना टीम इंडिया के लिए बड़ा झटका है।

साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेले जा रहे तीन मैचों की टी20 सीरीज की बात करें तो भारत ने इस सीरीज का पहला मैच 8 विकेट से जीत लिया था

और सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली थी। इस मैच में भारतीय टीम की बेहतरीन गेंदबाजी के सामने प्रोटियाज पहली पारी में 106 रन ही बना पाए थे और इसके बाद टीम इंडिया ने केएल राहुल के नाबाद 51 रन और सूर्यकुमार यादव की नाबाद 50 रन की पारी के दम पर मैच जीत लिया था।

कैसे सियासत और विरासत दोनों जीतने का मिला उद्धव ठाकरे को मौका, शिवाजी पार्क से भरेंगे हुंकार

मुंबईः बॉम्बे हाईकोर्ट ने शुक्रवार को उद्धव ठाकरे नीत शिवसेना को बड़ी राहत दी। ठाकरे गुट अब मुंबई के बीचोंबीच स्थित शिवाजी पार्क में पांच अक्टूबर को वार्षिक दशहरा रैली कर सकता है। हाईकोर्ट का यह फैसला उद्धव गुट के लिए किसी संजीवनी से कम नहीं है। इसी साल एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में विधायकों की बगावत के बाद महाराष्ट्र की सत्ता गंवाने वाले उद्धव ठाकरे के लिए कोर्ट का एक फैसला कई मायनों में बड़ी राहत है। ठाकरे के पास सियासत और विरासत दोनों जीतने का मौका है। शिवसेना इसी जगह से निकली है। ऐसे में सरकार गंवाने के बाद अपनी पहली रैली से उद्धव ठाकरे इमोशनल कार्ड खेल सकते हैं। कहते हैं कि बाल ठाकरे इसी जगह से हर साल पार्टी की आगे की दिशा तय करते थे। संकट की घड़ी में उद्धव ठाकरे के पास भी ऐसा ही मौका है। हर साल दशहरा रैली शिवसेना के लिए किसी बड़े उत्सव की तरह होती है।

शिवाजी पार्क में दशहरा रैलियों में ही बाल ठाकरे ने बड़ी घोषणाएं कीं थीं। इसी रैली में बाल ठाकरे ने अपने पोते आदित्य ठाकरे को लेकर जनता से अपील की थी। उन्होंने अपने अंतिम दशहरा संबोधन में शिवसैनिकों से अपने संदेश में उद्धव और आदित्य का ख्याल रखने को कहा था। 24 अक्टूबर, 2012 को अपने अंतिम दशहरा संबोधन में, बाल ठाकरे ने कांग्रेस और राकांपा के खिलाफ आवाज उठाई और अपने बेटे और पोते के लिए समर्थन मांगा था। उन्होंने कहा था, ह्आपने मेरा ख्याल रखा। अब, उद्धव और आदित्य का ख्याल रखना।

जब उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री बने थे तब उनका शपथ ग्रहण समारोह मुंबई के मराठी बहुल दादर इलाके में 28 एकड़ के ऐतिहासिक शिवाजी पार्क मैदान में ही हुआ था। शिवाजी पार्क शिवसेना का एक बेशकीमती गढ़ है। 1995 में भी, जब पूर्व शिवसेना-भाजपा गठबंधन ने पहली बार राज्य का चुनाव जीता था, तब भी इसी स्थान पर शिवसेना नेता मनोहर जोशी ने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी। पांच दशकों से अधिक समय से, मुंबई का शिवाजी पार्क वार्षिक दशहरा रैली के लिए शिवसेना का स्थल रहा है। जब बाल ठाकरे ने 1966 के दशहरे पर पार्क में अपनी पहली आधिकारिक रैली की, तो उसमें भारी भीड़ उमड़ी और एक परंपरा की शुरूआत हो गई। तब से हर साल शिवसेना ने दशहरा रैली शिवाजी पार्क में ही की है।

1966 में, बाल ठाकरे ने शिवसेना का गठन किया। इसी साल बाल ठाकरे ने शिवाजी पार्क में अपनी पहली रैली की थी। तब से वह हर साल दशहरा के दिन शिवाजी पार्क में रैली करते रहे। इस पार्क ने स्थानीय जनता के समर्थन को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

URGENTLY REQUIRED FEMALE STAFF
VACANCY VACANCY
ICON OPTICAL GALLERY
Urgently Required Female Staff
Accountant Cum Sales Girl For
Counter Sell.
Note : Must Have Computer Operating Knowledge
Contact Us : 9819292152
Shop No. 52, R.N.A. Arcade, Lokhandwala Complex, Andheri (West), Mumbai - 400 053
murtaza12152@yahoo.com

TASNEEM COLLECTION
Online Shopping Hub
Only of Ladies Bags, Kurtis, Accessories
Kitchen & Household items
Baby products
Plastic items
And much more.....all under one roof
Best business apportunity for housewives to become reseller & earn at zero investment
RH 1, C 26 row house number, Swamy Ayyappam temple road, Sector. 8, New Mumbai, Vashi-400 703
Farida Rampurawala : 8898065152

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक संपादक – मुर्तुजा मामाजीवालाा के द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, युनिट नं. 4, ग्राउंड फ्लोअर, एन. के इंडस्ट्रिअल इस्टेट , ऑफ आरे रोड , प्रवासी इंडस्ट्रिअल इस्टेट के पास , गेट नं. 2, गोरेगाव (पूर्व),मुंबई - 400063 से मुद्रित कर शिव वातुक सेना कासिम नगर नियर लक्ष्मी इस्टेट न्यू लिंक रोड, अधेरी (प),मुंबई -400053 प्रकाशित । संपादक : मुर्तुजा मामाजीवाला मों. 9819199997
■ T.C. NO. MAHHIN10172 ■ ईमेल : newsicon2021@gmail.com ■ newsicon.net